DSSSB PRT, TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR
ANKIT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
भक्ति काल
LIVE
10-06-2024 09:00 AM

हिन्दी साहित्य के इतिहास का द्वितीय चरण भक्तिकाल के नाम से जाना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संवत् 1375 से संवत् 1700 तक के कालखण्ड को भक्तिकाल की संज्ञा प्रदान की है। उनके अनुसार, इस काल खण्ड में उपलब्ध रचनाओं में भक्ति भाव की प्रधानता है, अतः इसे भक्तिकाल कहना उचित है। भक्ति भाव की प्रधानता के सम्बन्ध में उनका कथनीय है - "कालदर्शी भक्त कवि जनता के हृदय को सँभालने और लीन रखने के लिए दबी हुई भक्ति को जगाने लगे। क्रमशः भक्ति का प्रवाह ऐसा विस्तृत और प्रबल होता गया कि उसकी लपेट में केवल हिन्दू जनता ही नहीं, देश में बसने वाले सहृदय मुसलमानों में से भी न जाने कितने आ गए।"

भक्ति काव्य का स्वरूप :-

हिन्दी साहित्येतिहास के विकासात्मक वर्गीकरण में द्वितीय चरण को मध्यकाल की संज्ञा दी गई तथा इसे पुनः दो भागों में विभाजित कर- पूर्व मध्यकाल एवं उत्तर मध्यकाल नाम दिए गए हैं। पूर्व मध्यकाल को ही 'भक्तिकाल' कहा जाता है। सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने भक्ति आन्दोलन को. पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण कहा है। उनके अनुसार, "इस युग में धर्म शान बान का नहीं, बल्कि भावावेश का विषय हो गया था।" इस प्रकार इस काल के लिए जो नाम दिए गए हैं उनमें भक्तिकाल ही सर्वाधिक सहज, सरल एवं प्रवृत्ति मूलक होने से स्वीकार किया गया है। इस नामकरण से एक तो इस बात का बोध होता है कि इस कालखण्ड में भक्तिभाव की प्रधानता रही, साथ ही यह नामकरण इस काल के कवियों को भक्त कवि के रूप में प्रतिष्ठित करता है, जो उपयुक्त है।

भक्ति काव्य का वर्गीकरण :-

भक्तिकाल को सामान्यतः दो भागों में विभक्त किया गया है— निर्गुण धारा एवं सगुण धारा । पुनः इन दोनों धाराओं की दो-दो शाखाएँ हैं। निर्गुण धारा के अन्तर्गत ज्ञानाश्रयी शाखा एवं प्रेमाश्रयी शाखा हैं तथा सगुण धारा के अन्तर्गत राम काव्य एवं कृष्ण काव्य हैं।

- ज्ञानाश्रयी शाखा के कवियों को 'सन्त कवि' कहा जाता है तथा इस शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं - कबीर । प्रेमाश्रयी शाखा को प्रेमाख्यानक कांव्य परम्परा, प्रेममार्गी शाखा तथा सूफी शाखा के नाम से भी जाना जाता है । इस काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं- जायसी । इसी प्रकार राम काव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि हैं 'तुलसी' और कृष्ण काव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि हैं -सूरदास । स्पष्ट है कि भक्तिकाल के चार प्रमुख कवि, कबीर, जायसी तुलसी और सूर क्रमशः सन्त काव्य, सूफी काव्य, राम काव्य और कृष्ण परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

➢ **डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त** ने आचार्य शुक्ल द्वारा किए गए इस वर्गीकरण को अनुपयुक्त मानते हुए कहा है कि “शुक्ल जी के इस वर्गीकरण में केवल एक प्रवृत्ति को प्रधानता देकर शेष को उपेक्षित कर दिया गया है" जबकि इस काल में भक्ति की धारा के साथ-साथ अन्य काव्य धाराएँ भी सक्रिय रहीं हैं। उनके अनुसार, इस काल में धर्माश्रय, लोकाश्रय एवं राज्याश्रय में काव्य -रचना की परम्परा चलती रही। गुप्त जी के अनुसार, इस काल में भक्ति की धारा के अतिरिक्त मैथिली गीति परम्परा, ऐतिहासिक काव्य परम्परा ऐतिहासिक चरित काव्य परम्परा, रोमांटिक कथा काव्य परम्परा, रसिक भक्ति धारा, ऐतिहासिक मुक्त काव्य परम्परा एवं स्वछन्द प्रेम काव्य परम्परा की वेगवती धाराएँ भी प्रवाहित हो रही थीं।

- डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त के इस वर्गीकरण को अधिक मान्यता नहीं मिली और शुक्ल जी के वर्गीकरण को ही अधिकांश विद्वानों ने युक्तियुक्त एवं उपर्युक्त माना है। यही वर्गीकरण सामान्यतः हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रचलित भी है ।

प्रमुख सन्त कवि और उनकी रचनाएँ/ योगदान :-

कबीर

'बीजक' नाम से उनकी रचनाओं का संकलन धर्मदास द्वारा किया गया। जिसके तीन भाग हैं— साखी, सबद एवं रमैनी । कबीर का जन्म 1398 ई. और मृत्यु 1518 ई. में हुई । (इनके जन्म और मृत्यु दोनों के समय में विवाद है) कबीर जाति के जुलाहे थे, काशी में रहते थे तथा रामानन्द उनके गुरु थे। कबीर की पत्नी का नाम लोई, पुत्र का नाम कमाल एवं पुत्री का नाम कमाली था। उनकी कविता में उपदेशों की प्रवृत्ति है, रहस्यवादी भावना है तथा प्रतीकों का प्रयोग उनकी भाषा में निहित है।

कबीर निरक्षर थे। स्वयं उन्होंने स्वीकार किया है—

"मसि कागद छूयौ नहीं कलम गह्यौ नाहिं हाथ । "

उनकी रचनाओं का संकलन बाद में उनके शिष्यों ने किया। 'कबीर - बीजक' में तो उनकी रचनाएँ संकलित हैं ही इसके अतिरिक्त बाबू श्याम सुन्दर दास ने उनकी रचनाओं का संकलन 'कबीर ग्रन्थावली' में किया। उन्होंने मूर्ति पूजा, तिलक छाप, तीर्थाटन, गंगा स्नान, रोजा, हिंसा, जातिप्रथा एवं ऊँच-नीच की भावना आदि का खण्डन किया।

जैसे,

1. "माला फेरत जुग भया फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर ।।

2. ऊँचे कुल का जनमिया करनी ऊँच न होय ।
सुबरन कलश सुरा भरा साधू निन्दत सोय ।।

3. पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूं पहार ।
घर की चाकी क्यों नहिं पूजैं पीसि खाय संसार ।।

रामानन्द :-

इनका जन्म 1368 ई. तथा मृत्यु 1468 ई. में हुई। कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनकी शिक्षा काशी में हुई । भक्तमाल के अनुसार, रामानन्द के बारह शिष्य थे। जिनके नाम हैं- अनन्तानन्द, सुखानन्द, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द, भावानन्द पीपा, कबीर, सेन धन्ना, रैदास, सुरसुरी और पद्मावती है। रामानन्द के गुरु का नाम राघवानन्द था। इन्होंने रामावत - सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। तीर्थयात्रा, मूर्तिपूजा, वेदादि का विरोध करते हुए उन्होंने अन्तः साधना पर बल दिया। रामानन्द के गुरु राघवानन्द जी ने "सिद्धान्त पंच मात्रा" नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

रैदास (1377 - 1520)

जाति के चमार थे। काशी के निवासी थे। जन्मकाल के सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कहना सम्भव नहीं है। कुछ विद्वान् इन्हें प्रसिद्ध कवयित्री मीरा का गुरु भी बताते हैं । सन्त रैदास का एक अन्य नाम रविदास भी है। सन्तबानी संग्रह के अन्तर्गत इनकी रचनाओं का संकलन 'रविदास की बानी' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इनके लिखे हुए 40 पद गुरु ग्रन्थ साहब में भी संकलित हैं। रैदास का नाम रामानन्द के 12 शिष्यों में है, किन्तु रैदास की रचनाओं में कहीं भी रामानन्द का उल्लेख नहीं है । निर्गुण ब्रह्म उनके लिए भी जिज्ञासा का विषय है। उनकी भाषा सरल ब्रजभाषा है जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली, उर्दू एवं फारसी के शब्द भी मिल जाते हैं।

अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी ।
प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी जाकी अंग-अंग वास समानी ।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चन्द चकोरा ।।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा ।।

गुरुनानक (1469-1538 ई.) :-

सिख सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु नानक इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। उनका जन्म 1469 ई. में तलवण्डी में हुआ था, जो ननकाना साहब के नाम से जाना जाता है। नानक के पद 'गुरु ग्रन्थ साहब' में संकलित हैं। जपुजी, असा दीवार, रहिरास, सोहिला उनकी प्रमुख रचनाओं के नाम हैं।

नानक देव समन्वयशील एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनके पिता का नाम कालूचन्द और माता का नाम तृप्ता था। इनके दो पुत्र भी हुए - लक्ष्मीचन्द, श्रीचन्द । वे भ्रमणशील सन्त थे । निर्गुण ब्रह्म के प्रति भक्ति उनके काव्य में विद्यमान है। शान्त रस की प्रधानता नानक की रचनाओं में है। उनकी भाषा पंजाबी एवं ब्रजभाषा मिश्रित है। उनके पद राग-रागिनियों में निबद्ध हैं जिनमें करुण, शान्त एवं श्रृंगार रस भी दिखाई पड़ते हैं।

हरिदास निरंजनी :-

ये निरंजनी सम्प्रदाय के कवि थे। इस सम्प्रदाय को नाथ पंथ एवं सन्त काव्य के बीच की कड़ी माना जा सकता है। इनके लिखे ग्रन्थ हैं- अष्टपदी, जोग ग्रन्थ ब्रह्मस्तुति, हंस प्रबोध निरपखमूल ग्रन्थ, पूजायोग ग्रन्थ, समाधिजोग, ग्रन्थ, संग्राम जोग ग्रन्थ। इन्होंने ब्रजभाषा में काव्य की रचना की है।